NEERAJ®

मीरा का विशेष अध्ययन

M.H.D.-21

Chapter Wise Reference Book
Including Solved Sample Papers

By: *Vaishali Gupta*

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com**
Website: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at:* ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and up-to-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

Get Books by Post (Pay Cash on Delivery)

If you want to Buy NEERAJ BOOKS for IGNOU Courses then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com . where you can select your Required NEERAJ IGNOU BOOKS after seeing the Details of the Course, Name of the Book, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ IGNOU BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the Various "Special Discount Schemes" being offered by our Company at our Official website www.neerajbooks.com.

We also have "Cash of Delivery" facility where there is No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through "Cash on Delivery" service (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 3-4 days after we receive your order and it takes Nearly 4-5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 8-9 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

CONTENTS

मीरा का विशेष अध्ययन

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-3
Sample Question Paper-1 (Solved)	1-3
Sample Question Paper-2 (Solved)	1-3
Sample Question Paper-3 (Solved)	1-3

S.No.	***Chapterwise Reference Book***	*Page*

मीरा का जीवन और युग

1.	मीरा का जीवन परिचय	1
2.	मीरा और उनका युग	12
3.	गुजरात के लोक जीवन में मीरा	25
4.	परिवार में मीरा	31
5.	भक्ति आंदोलन में मीरा का महत्त्व	40

मीरा की भक्ति भावना

6.	मीरा के कृष्ण	52
7.	मीरा की भक्ति का स्वरूप	61

S.No.	Chapter	Page
8.	मीरा की प्रेमभावना	73
9.	मध्यकालीन भारतीय भक्त कवयित्रियां और मीरा	82
10.	मीरा परवर्ती हिंदी की भक्त कवयित्रियाँ	91
	मीरा की काव्यकला	
11.	मीरा की काव्यकला	98
12.	मीरा की वेदना और विद्रोह	108
13.	मीरा और लोकमानस	118
14.	मीरा की काव्यभाषा	126
15.	मीरा की प्रमुख कविताओं का विश्लेषण	134
	आज के समय में मीरा का महत्त्व	
16.	स्त्री विमर्श और मीरा	147
17.	हिंदी आलोचना में मीरा	160
18.	मीरा की प्रासंगिकता	170

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

Exam Held in

February – 2021

(Solved)

मीरा का विशेष अध्ययन

M.H.D.-21

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न क्रमांक 1 अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) भज मन चरन कंवल अबिनासी।
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ
सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हें, कहा लिये
करवत कासी।।
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ
पड्याँ उठि जासी।।
कहा भयो है भगवा पहर्यां, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगति नहीं जाती, उलटि
जनम फिर आसी।।
अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जम की फाँसी।।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद भक्तिकाल की सगुण भक्ति की कृष्ण भक्तिधारा की प्रमुख कवयित्री मीराबाई द्वारा रचित है। मीराबाई ने श्रीकृष्ण की भक्ति में लोक-लाज, मोह-माया सब त्याग दिया था। मीरा इस पद द्वारा बताना चाहती है कि इस संसार के दुखों से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है–ईश्वर की भक्ति।

व्याख्या–हे मन! उस अविनाशी कृष्ण के चरण-कमलों का स्मरण कर। इस धरती और आकाश के बीच जितना जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सबका सब नष्ट हो जायेगा। तीर्थयात्रा करना, व्रत रखना या ज्ञान की बातें कहना और काशी में करवट लेना आदि सब बातें झूठी हैं और आडम्बर हैं। इस शरीर का घमंड नहीं करना चाहिए। यह तो नश्वर है और एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा। यह संसार तो चिड़ियों का खेल है, जो संध्या समय होते ही समाप्त हो जायेगा। इस भगवे कपड़े को पहनने से क्या लाभ और घर छोड़ संन्यास लेने से क्या फायदा, यदि योगी होकर मुक्ति को नहीं जान पाया। इस प्रकार केवल दिखावा करने से आवागमन (जीवन-मरण रूपी चक्र) की फाँसी समाप्त नहीं होती। हे श्याम! तुम्हारी दासी मीरा हाथ जोड़कर विनती कर रही है कि हे गिरिधर नागर! मेरे सांसारिक बंधनों को नष्ट कर दो।

विशेष–1. ईश्वर भक्ति का महत्त्व समझाया गया है।

2. राजस्थानी भाषा है, साथ में ब्रजभाषा और अन्य भाषाओं का प्रभाव भी है।

3. संगीतात्मकता एवं नाद सौंदर्य के कारण भावप्रवणता अधिक बढ़ गई है।

(ख) (ऊदौं) थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानों
बात हमारी।।
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जारी।
कुलकै दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रहि भारी।।
साधाँ रे संग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी।
बड़ाँ घराँ थे जनम लियो छै, नाँचो दे दे तारी।।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, थे कई मन में धारी।
मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी।।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद भक्तिकालीन सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति काव्य से जुड़ी भक्त कवयित्री मीराबाई द्वारा रचित है। मीरा राजघराने की बहू थी, किंतु उन्होंने भक्ति के लिए स्त्री के लिए नियत पारिवारिक, धार्मिक एवं सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन किया, जिसके कारण उन्हें परिवारजन ने समझाया, रोका, यातनाएं दीं, प्रलोभन दिए, किंतु मीरा ने किसी बात को नहीं माना। अपने भक्तिहठ के कारण परिवार वालों द्वारा दी जा रही यातनाओं का वर्णन इस पद में किया है।

व्याख्या–मीरा कहती है कि उनकी ननद ऊदाबाई उन्हें समझाने आती है और कहती है कि परिवार की इच्छा और मान-मर्यादा के लिए भाभी परिवारजन की बात मान लो। मीरा कहती है कि राणा ने भी उन पर साधु-संगति में जाने के कारण क्रोध किया था। ऊदाबाई कहती है कि भाभी आप कुल को दाग लगा रही हो, जिससे समाज में राणा कुल की बहुत निंदा हो रही है। आप सारी लज्जा एवं मर्यादा त्यागकर साधुओं के संग वन-वन भटकती हों, बड़े घर में जन्म लेकर भी ताली दे-देकर

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सारे समाज के सामने नाचती हो। तुमने तो सूरज के समान तेजस्वी वर पाया था, आपके इस व्यवहार से आपके लिए अपने मन में क्या सोचते होंगे। अत: मीराबाई साधु-संत की संगति और गिरधर की भक्ति त्यागकर हमारे साथ चलो।

विशेष-1. मध्यकालीन युग में स्त्रियों की शोचनीय दशा विशेषकर राजघरानों में स्त्री की दासी वाली स्थिति का वर्णन किया है।

2. स्त्री पर होने वाले अत्याचारों की झलक है।

3. मीरा का समाज की रूढ़ियों के प्रति विद्रोह भी स्पष्ट हो रहा है।

4. राजस्थानी भाषा है।

5. नारी के मन की पीड़ा संगीतमयी प्रस्तुति से और अधिक मार्मिक रूप से अभिव्यक्त हो रही है।

(ग) तू मत बरजे माइडी, साधाँ दरसण जाती।
राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती।
माइ कहे सुन धीहड़ी, काहे गुण फूली।
लोक सोवे सुख नींदड़ी, तूँ क्यूं रैणजँ भूली॥
गेलीं दुनिया बावली, ज्याँकूँ राम न भावे।
ज्याँरै हिरदे हरि बसे, त्याँकूँ नींद न आवे।
चोमासा की बावड़ी, ज्याँकी नीर न पीजे।
हरि नाले अमृत भरे, ज्याँकी आस करीजे॥
रूप सुरंगा रामजी, मुख निरखत जीजे।
मीरां व्याकुल बिरहणी, हरि अपणी कर लीजे॥

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद सगुण कृष्ण भक्तिधारा की मूर्धन्य कवयित्री मीराबाई द्वारा रचित है। इस पद में मीरा ने ईश्वर की भक्ति न करने वालों द्वारा ईश्वर-भक्तों को भक्ति से विमुख करने वालों को समझाने का प्रयास किया है कि राम-नाम की महिमा कितनी अनमोल है।

व्याख्या–बेटी माँ से कह रही है कि मैं साधुओं के दर्शन के लिए जा रही हूँ। जिसके मन में राम-नाम बस जाता है, उसका मन सदैव उनके निकट जाने को उतावला रहता है। माँ कहती है कि बेटी क्या तू पागल हो गई है। जब सारी दुनिया चैन से सो रही है, तो तू क्यों अपनी नींद खराब कर रही है। इसके उत्तर में बेटी कहती है कि दुनिया तो मूर्ख है, जिसके हृदय में राम बस गए हो, वह भला कैसे सो सकता है।

बरसात के मौसम में भरी बावड़ी का पानी नहीं पिया जाता, लेकिन जिसे हरि की आस है, उसके लिए उन्होंने अमृत के सरोवर भर दिए हैं। राम जी का रूप तोते की भाँति है, जिनका मुख बार-बार निहाने की इच्छा होती है। हे हरि मीरा आपके विरह की व्याकुल है, उसे अपना बना लो अर्थात उस पर अपनी भक्ति की कृपा कर उसे अपनी शरण में ले लो।

विशेष–1. ईश्वर-भक्ति में डूबे भक्त की मनोदशा का चित्रण है।

2. चौमासे की बावड़ी, रूप सुरंगा जैसे उदाहरण देकर भक्ति को पुष्ट करने का प्रयास है।

3. राजस्थानी के संग अन्य भाषाओं का प्रभाव भी झलकता है।

(घ) पगे घूँघरू बाँध मीरां नाची रे।
मैं सपने तो नारायण की, हो गई आपही दासी रे॥
विष का प्याला राणाजी ने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे॥
लोक कहे मीरां भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे॥
मीरां के प्रभु गिरधारनागर, हरिचरणां की दासी रे॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-141, प्रश्न 3, व्याख्या-2

प्रश्न 2. मीरा के युग की दार्शनिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न 5

प्रश्न 3. मीरा के आराध्य 'कृष्ण' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-57, प्रश्न 2

प्रश्न 4. मीरा की काव्य-कला के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-99, 'मीरा की काव्यकला'

प्रश्न 5. मीरा की कविता में स्त्री-सशक्तीकरण के बिंदुओं की पड़ताल कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-149, 'मीरा का स्त्री विमर्श'

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) मीरा की द्वारिका प्रवास

उत्तर–मीरा ने मेवाड़ की परंपराओं का अनुसरण नहीं किया था, इसीलिए मेवाड़ के महाराणा उनके विरोधी बन गए थे, किंतु मेड़तियों के डर से वे मीरा के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने से डरते थे। किंतु इसी बीच मारवाड़ के राव मालदेव ने मेड़ता पर आक्रमण करके मेड़ता के स्वतंत्र अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। मेड़तियों की शक्ति समाप्त हो गई, जिससे उनका मेवाड़ की राजनीति में हस्तक्षेप खत्म हो गया। ऐसे में मीरा का चित्तौड़ दुर्ग में रहना अधिक सुरक्षित नहीं था। मीरा ने चित्तौड़ दुर्ग छोड़ा और मेड़ता जाने का विचार किया, किंतु जब उन्हें मालदेव के आक्रमण ओर मेड़ता के पतन का पता चला, तो वह मेड़ता ना जाकर वृंदावन चली गई।

ऐसा कहा जाता है कि वृंदावन में उनकी भेंट जीव गोस्वामी से हुई। मीरा का मन वृंदावन में नहीं लगा। अत: उन्होंने द्वारिका

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मीरा का विशेष अध्ययन

मीरा का जीवन और युग

मीरा का जीवन परिचय

1

परिचय

मीरा मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का प्रखर चेहरा थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन कृष्ण भक्ति में लगा दिया। मीरा का जीवन कोई आम जीवन नहीं था, समर्पण उनके जीवन का विशेष पहलू था, फिर भी उनका जीवन एक परंपरा का विद्रोह करने वाली नारी का जीवन था। उन्होंने उन सभी नैतिक और सामाजिक बातों को ललकारा था, जो एक राजपूत स्त्री में होनी जरूरी मानी जाती थी और वह भी एक राजवंशी महिला में। मीरा ने राजपूतों के परंपरागत नियमों को न मानकर एक निडर लहर पैदा कर दी थी। मीरा की कृष्ण के प्रति भक्ति साधन थी, साध्य नहीं। कृष्ण भक्ति के माध्यम से मीरा ने सामंतवादी-ब्राह्मणवादी बेड़ियों को तोड़ा एवं स्त्री मुक्ति की एक नई राह तलाश की।

अध्याय का विहंगावलोकन

जीवन से संबंधित स्रोत सामग्री

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में भक्तमालों का विशिष्ट स्थान रहा है, भक्तमाल अर्थात जिनमें युगीन भक्तों के परिचयात्मक विवरण हुआ करते थे। इन भक्तमालों में मीरा का विवरण भी एक भक्त के रूप में ही मिलता है, क्योंकि मीरा अपनी कृष्ण भक्ति के लिए विख्यात थी। बहुत-से भक्तों ने भक्तमाल में मीरा का उल्लेख किया है। ब्रह्मदास ने अपने भक्तमाल में मीरा के विषपान का उल्लेख किया है। उन्होंने पमेल नामक भक्त स्त्री के साथ मीरा की साम्यता स्थापित की है। नाभादास 17 वीं सदी के उत्तरार्द्ध के रचनाकार थे। उन्होंने मीरा के विषय में लिखा है कि मीरा निरंकुश एवं अति निडर थी। मीरा ने कृष्ण भक्ति के लिए 'लोक-कुल, लाज-शृंखला' सबका त्याग कर दिया था। प्रियादास की 'भक्तमाल की टीका', 'भक्तिरस बोधिनी' जिसकी रचना 1769 के आस-पास की मानी जाती है, उसमें मीरा के विषपान की घटना, अकबर व मीरा के भेंट के प्रसंग तथा द्वारिका में रणछोड़जी की मूर्ति में मीरा के विलीनीकरण की घटना का उल्लेख मिलता है। यह वह समय था, जब मीरा के साथ अनेक किंवदंतियां व चमत्कारिक घटनाएँ जुड़ चुकी थीं। प्रियादास के पौत्र वैष्णवदास ने 'भक्त रस बोधिनी टीका' का भावार्थ दिया है। राघौदास के भक्तमाल, जिनकी रचना का अनुमानित समय सम्वत् 1717 है, नाभादास के भक्तमाल पर भी आधारित है, तथापि स्रोत सामग्री के रूप में इसका भी विशिष्ट स्थान है।

वार्ता साहित्य में भी मीरा के विषय में बताया गया है। वार्ता साहित्य के रचनाकार भी वैष्णव भक्त ही थे। वार्ता साहित्य मूलरूप से गद्य ग्रंथ है। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' एक ऐसा ही वार्ता ग्रंथ है तथा इसका संबंध वल्लभ संप्रदाय से है। इस ग्रंथ से ऐसा आभास होता है कि बल्लभ संप्रदाय मीरा एवं उसकी भक्ति के स्वरूप को पसंद नहीं करता था। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में तथा वल्लभ संप्रदाय से संबंधित एक अन्य ग्रंथ 'दो सौ वैष्णव की वार्ता' में भी मीरा का उल्लेख किया गया है। मध्यकालीन राजपूताने में ख्याति ग्रंथ लिखे जाने की परंपरा थी, जिनमें राजपरिवारों की प्रशंसा की जाती थी। ख्याति ग्रंथों से मीरा के विषय में तो कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती, किंतु उनके परिवार के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारियां अवश्य प्राप्त होती हैं। इसके अलावा नागरीदास के 'नागर समुच्चय' एवं सुखसारण मीराबाई की परची में मीरा के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है। नागरीदास किशनगढ़ नरेश राज सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे, जिनका वास्तविक नाम सावंत सिंह था तथा इन्हें राजस्थानी व ब्रजभाषा का अच्छा ज्ञान था। सुखसारण रामस्नेही संप्रदाय से संबंधित थे। इन दोनों रचनाकारों के ग्रंथों में मीरा से संबंधित उन समस्त घटनाओं का विवरण है, जो आज के समय में किंवदंतियां बन चुकी हैं। ये रचनाएं 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध की हैं, किंतु मीरा के अध्ययन में इनका विशिष्ट महत्त्व है। लिखित सामग्री की अपेक्षा पुरातात्विक स्रोत सामग्री को अधिक विश्वसनीय व प्रामाणिक माना जाता है। मीरा के आलोचकों द्वारा पुरातात्विक स्रोत सामग्री का उपयोग बहुत कम किया गया, किंतु वर्तमान समय में मीरा के जीवन से संबंधित जो शोध किये जा रहे हैं, उनमें पुरातात्विक स्रोत सामग्री का उपयोग भी किया गया है। पाण्डुलिपियां भी मीरा से संबंधित जानकारी का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, किंतु ये देश के विभिन्न भागों में बिखरी हुई हैं तथा इनका संग्रहण एवं प्रकाशन भी सही ढंग से नहीं हो पाया है।

इतिहास के आलोक में मीरा का जीवन

भक्तों द्वारा दिया गया मीरा का विवरण साधारण जानकारी पर आधारित है, जो उन्होंने सामान्य जनमानस से सुना। भक्त मीरा या

www.neerajbooks.com

महाराणा परिवार का इतिहास लिखने की मंशा नहीं रखते और न ही उनका कोई संपर्क चित्तौड़ दुर्ग एवं उसकी राजनीतिक गतिविधियों से था। इतिहास लेखन की राजनीतिक प्रवृत्ति ही ऐसी रही है कि वह महिलाओं के योगदान को अधिक महत्त्व नहीं देती। चूँकि मीरा भी एक स्त्री थी इसलिए परवर्ती इतिहास ग्रंथों में मीरा के विषय में अथिक उल्लेख नहीं मिलता। सही अर्थों में मीरा एक विद्रोहिणी थी, जिसने महाराणा परिवार की झूठी मर्यादा को तोड़ा था, इसलिए मेवाड़ की राजसत्ता यह कभी नहीं चाहती थी कि मीरा का कहीं कोई उल्लेख हो। इसी कारण मीरा के अध्येताओं के पास मीरा से संबंधित स्रोत सामग्री लगभग न के बराबर है, तथापि परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मीरा के जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है, जोकि इतिहास सम्मत भी हो।

मीरा को उनके दादा राव दूदाजी ने पाला था, जोकि मेड़ता के शासक थे। बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि वाली मीरा राव दूदा के साथ स्थानीय राजनीति को करीब से देख रही थी। महाराणा सांगा मीरा से प्रभावित थे तथा राजनीतिक हित को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मीरा को अपने ज्येष्ठ पुत्र कुंवर भोज की पत्नी बनाने का निश्चय किया। मीरा का विवाह कुंवर भोज के साथ हुआ, किंतु जल्दी ही कुंवर भोज की मृत्यु हो गई। मीरा ने पारिवारिक मर्यादाओं की अवहेलना करते हुए अपना जीवन मेवाड़ की जनता के लिए समर्पित किया तथा जनसंपर्क का निश्चय किया। महाराणा परिवार मीरा के इस व्यवहार से नाखुश था। मीरा ने महाराणा परिवार के प्रतिबंधों को न मानते हुए मेवाड़ की जनता के लिए तथा एक स्त्री के रूप में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू कर दिया। इसके लिए मीरा ने भक्ति के मार्ग को चुना। इससे महाराणा परिवार मीरा के विरुद्ध हो गया और मीरा को चित्तौड़ दुर्ग छोड़ना पड़ा। वह पहले मेड़ता और उसके बाद वृंदावन गई। उसके बाद वह द्वारिका गई और अपना शेष जीवन वहीं बिताने का निश्चय किया। इसी बीच मेवाड़ में राजनीतिक परिवर्तन हुए तथा महाराणा उदयसिंह के हाथों में मेवाड़ की सत्ता आई। उन्होंने मीरा से पुनः मेवाड़ लौट आने का आग्रह किया, किंतु मीरा ने अज्ञातवास को अपनाया।

मीरा का बचपन

मीरा के बचपन के विषय में किंवदंतियों से जानकारी मिलती है। मीरा मेड़ता के संस्थापक राव दूदाजी की पौत्री तथा रतनसिंह की पुत्री थी। मीरा के पिता रतनसिंह का देहांत खानवा के युद्ध में हो गया था। ऐसा अनुमान है कि मीरा की मां का देहांत भी बचपन में ही हो गया था। उनका पालन-पोषण रावदूदा ने ही किया। रावदूदा विष्णु के एक लोकरूप चारभुजानाथ के परम भक्त थे। मीरा की राजनीति समझ का विकास रावदूदा के संरक्षण में रहते हुए हुआ। ऐसा माना जाता है कि रावदूदा की भक्ति का प्रभाव भी मीरा पर अवश्य रहा होगा, किंतु यह आश्चर्यजनक है कि रावदूदा विष्णुभक्त थे, जबकि मीरा कृष्ण भक्त।

मीरा का जन्म मारवाड़ के मेड़ता प्रदेश में हुआ था, किंतु उनके जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद है। मीरा के जन्म स्थल के तौर पर कुड़ली, मेड़ता, बाजोली मारवाड़ एवं मेवाड़ कई गांवों के नाम प्रस्तुत किये जाते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मीरा का जन्म मेवाड़ के किसी गाँव में हुआ था, जहाँ उसका ननिहाल था। मीरा के जन्म स्थल को लेकर मतभेद अवश्य है, किंतु यह निश्चित है कि मीरा का बचपन मारवाड़ के मेड़ता प्रदेश में ही बीता था।

मारवाड़ और मेवाड़ में मीरा के विषय में बहुत-सी किंवदतियां प्रचलित हैं, जिनसे पता चलता है कि मीरा बचपन से ही कृष्ण को अपना पति मानने लगी थी, किंतु अनुमान ऐसा लगाया जाता है कि वह अपने पति कुंवर भोजराज की मृत्यु के पश्चात् से कृष्ण को अपना पति मानती थी। कुंवर भोजराज की मृत्यु के पश्चात् जब मीरा को सती किया जाने लगा तो उन्होंने कहा कि वह कृष्ण की वैधानिक पत्नी है, किसी मेवाड़ कुंवर की विधवा नहीं।

मीरा के काव्य अध्ययन तथा उनके जीवन की घटनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह तो निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि वह चतुर एवं तीक्ष्ण बुद्धि की थी। उनका रूप भी बहुत सुंदर था, इसीलिए महाराणा सांगा ने मीरा को अपने ज्येष्ठ पुत्र के लिए बहु के रूप में स्वीकार किया।

मीरा की बचपन से ही साहित्य में रुचि थी, जोकि बाद में मीरा के काव्य सृजन एवं निर्माण में सहायक सिद्ध हुई। मीरा ने विवाह के पश्चात् मेवाड़ राजपरिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया, किंतु कुंवर भोजराज की जल्दी ही मृत्यु हो गई, जिससे मीरा के सामने संकट आ गया, परंतु मीरा ने उनका मुकाबला पूरे साहस के साथ किया। मीरा ने सती होने से इंकार किया तथा कृष्ण को अपना पति बताया, इसलिए यह कहा जा सकता है कि मीरा की कृष्ण भक्ति उनके बचपन की श्रद्धा का परिणाम नहीं, बल्कि परवर्ती समय की जरूरत थी।

चित्तौड़गढ़ में मीरा का जीवन

अमीर खुसरो ने चित्तौड़ के किले का भव्य वर्णन करते हुए लिखा है कि इसमें अनेक मंदिर तथा महल है, जिनमें मध्यकालीन राजपूत स्थापत्य की सर्वश्रेष्ठता नजर आती है। चित्तौड़ का दुर्ग एक विकसित मध्यकालीन शहर था। देश के अनेक भागों से तथा इस्लामिक जगत के बहुत-से व्यापारी दुर्ग में व्यापार के उद्देश्य से आते थे और कार्य हो जाने पर लौट जाते थे। विभिन्न संप्रदाय एवं मत-मतांतरों के योगी, साधु, भक्त इत्यादि भी समय-समय पर दुर्ग में आते रहते थे। ऐसा माना जाता है कि मीरा के चित्तौड़ प्रवास के दौरान उनका संपर्क अनेक व्यापारियों व भक्तजन से रहा होगा तथा उन्हें देश-विदेश की जानकारी भी होती होगी। मीरा चित्तौड़ के जिन महलों में रहती थी, उनका निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया था, इसलिए इन्हें कुंभा महल के नाम से जाना जाता है। ये महल उस समय की सभी ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी रहे हैं। मीरा के साथ इस दुर्ग में बहुत से षड्यंत्र और राजनीतिक घटनाएं घटती रहीं, फिर भी मीरा इस दुर्ग में ही रहती रहीं, अन्यथा वह मेवाड़ के अन्य दुर्ग में भी रह सकती थी, जो उनके पास थे। महाराणा विक्रमादित्य एवं बनवीर ये बिल्कुल नहीं चाहते थे कि मीरा वहाँ रहे और मीरा भी किसी अन्य दुर्ग में रहकर बिना किसी रुकावट के कृष्ण भक्ति कर सकती थी, फिर ऐसा क्या कारण था कि मीरा ने वहीं रहना स्वीकार किया।

यदि मीरा दुर्ग त्याग देती तो बनवीर एवं महाराणा विक्रमादित्य को अपनी मनमानी करने का पूरा अवसर मिल जाता, इसलिए

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राजनीतिक सूझ-बूझ के आधार पर मीरा को दुर्ग को छोड़ना उपयुक्त नहीं लगा, इससे उनकी निरंकुशता पर अंकुश लगा हुआ था। मेड़तिया राठौड़ की भी यही इच्छा थी, क्योंकि मीरा के माध्यम से वे मेवाड़ राजमहल में अपना स्थान तथा हस्तक्षेप बना सकते थे। अत: उस समय की परिस्थितियों की भी यही माँग थी कि मीरा दुर्ग न छोड़े और मेवाड़ की सत्ता किसी कुशल प्रशासक के हाथों में रहे। महाराणा विक्रमादित्य अपरिपक्व व राजनीति सूझ-बूझ से वंचित था। मेवाड़ के सामंत उसके इस व्यक्तित्व से बहुत निराश थे। वल्लभ संप्रदाय से संबंधित ग्रंथों–'चौरासी वैष्णव की वार्ता' एवं 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्त्ता' में मीरा की आलोचना की गई है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि शायद मीरा ने वल्लभ संप्रदाय में अपनी आस्था प्रकट न की हो या फिर मेवाड़ के महाराणा के डर से ग्रंथकारों ने ऐसा किया हो।

मीरा की भक्ति के विषय में विद्वानों में आज भी मतभेद है। चित्तौड़ दुर्ग का सर्वेक्षण करने पर अनेक मंदिरों, शिवालयों तथा मठों के मध्यकालीन अवशेष प्राप्त होते है। साथ ही दुर्ग में जैन मंदिर भी मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि ये सभी संप्रदाय और अनुयायी दुर्ग में निवास करते थे और मीरा का भी इनके साथ निकट संपर्क रहा होगा, अत: इन संप्रदायों का कुछ-न-कुछ प्रभाव भी मीरा पर पड़ा होगा, किंतु फिर भी विद्वान मीरा को किसी संप्रदाय विशेष से जोड़ने में असफल रहे हैं। मीरा से संबंधित ऐसी बहुत-सी किंवदंतियां प्रचलित हैं, जो चित्तौड़ दुर्ग में मीरा के जीवन के विषय में बताती हैं।

मीरा की कविताओं में परंपरा का विरोध तथा सामंती मूल्यों के प्रति असंतोष झलकता है। मीरा से संबंधित लोक प्रचलित किंवदंतियों से पता चलता है कि वह रूढ़िवादी परंपराओं का विरोध करती थी। महाराणा के परिवार में शादी के पश्चात् देवी की पूजा करने की परंपरा थी, किंतु मीरा ने दुर्ग में स्थित देवी के मंदिर में देवी की पूजा करने से मना कर दिया था। महाराणा मीरा के इस विरोध से क्रोधित हुए तथा उन्हें कई अवसरों पर प्रताड़ित करने लगे। मीरा के विषय में एक किंवदंती यह है कि महाराणा का आदेश न मानने पर मीरा को तहखाने में कैद कर लिया गया था। इसके अलावा मीरा के विषपान की घटना भी प्रचलित है। मीरा ने जो परंपरा का विरोध किया था उसी के कारण महाराणा मीरा के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार करते रहे। सच यह है कि मीरा का चित्तौड़ दुर्ग में पूरा जीवन झूठी मान्यताओं, अमानवीय रूढ़ियों तथा सामंती मूल्यों का विरोध करने में बीता। मीरा कृष्ण की भक्ति में कुल मर्यादा को त्यागकर नाचती-गाती थीं, जोकि महाराणा कुल की परंपरा के बिल्कुल विपरीत था।

मीरा का दुर्ग त्यागना एवं द्वारिका प्रवास

मीरा ने मेवाड़ की परंपराओं का अनुसरण नहीं किया था, इसीलिए मेवाड़ के महाराणा उनके विरोधी बन गए थे, किंतु मेड़तियों के डर से वे मीरा के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने से डरते थे। किंतु इसी बीच मारवाड़ के राव मालदेव ने मेड़ता पर आक्रमण करके मेड़ता के स्वतंत्र अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। मेड़तियों की शक्ति समाप्त हो गई, जिससे उनका मेवाड़ की राजनीति में हस्तक्षेप खत्म हो गया। ऐसे में मीरा का चित्तौड़ दुर्ग में रहना अधिक सुरक्षित नहीं था। मीरा ने चित्तौड़ दुर्ग छोड़ा और मेड़ता जाने का विचार किया, किंतु जब उन्हें मालदेव के आक्रमण ओर मेड़ता के पतन का पता चला, तो वह मेड़ता ना जाकर वृंदावन चली गई।

ऐसा कहा जाता है कि वृंदावन में उनकी भेंट जीव गोस्वामी से हुई। मीरा का मन वृंदावन में नहीं लगा। अत: उन्होंने द्वारिका की ओर प्रस्थान किया। चित्तौड़ दुर्ग में मीरा को सामंतवाद का सामना करना पड़ा और वृंदावन में उन्हें ब्राह्मणवाद का। अपने स्वभाव के अनुसार मीरा ने वृंदावन में भी रूढ़ियों का विरोध किया, जो वहाँ के ब्राह्मणों को नापसंद रहा होगा, ऐसे में मीरा का वहाँ अधिक समय तक रुकना उपयुक्त नहीं था।

द्वारिका में कृष्णजी के दो मंदिर है, एक समुद्र के बीच में टापू पर बसे गाँव तो दूसरा मंदिर समुद्र तट पर बसे मुख्य कस्बे में है। दोनों मंदिरों के पंडे यह दावा करते है कि मीरा ने अपना शेष जीवन उनके द्वारा कथित मंदिरों में बिताया। मीरा ने किस मंदिर में अपना जीवन बिताया यह निश्चित तौर पर बताना मुश्किल है, किंतु यह सही है कि मीरा ने द्वारिका में ही प्रवास किया।

मध्यकाल में मेवाड़ तथा गुजरात में काफी समानता थी, यह समानता उनके रहन-सहन, भाषा, पहनावे व संस्कृति में पाई जाती थी। वर्तमान समय में द्वारिका में मध्यकालीन तीन मंदिरों के अवशेष पाये जाते हैं, जिनकी स्थापत्य कला मध्यकालीन राजपूत स्थापत्य का सुंदर नमूना दर्शाती है। चित्तौड़गढ़ की कला का प्रभाव इन मंदिरों के स्थापत्य में दिखाई देता है। मीरा को द्वारिका में अजनबीपन का एहसास नहीं हुआ होगा, इसीलिए मीरा ने अपना शेष जीवन यहाँ बिताने का निश्चय किया।

गुजरात और मेवाड़ में शत्रुता थी, क्योंकि महाराणा सांगा के समय में गुजरात के सुल्तान को मेवाड़ की सेना ने परास्त कर दिया था। मेवाड़ की सेना अब गुजरात में प्रवेश नहीं कर सकती थी, अत: मीरा का यहाँ रहना सुरक्षा की दृष्टि से भी उचित विकल्प था। मीरा को द्वारिका में रहने का एक लाभ और था कि वह यहाँ रहकर मेवाड़ के लोगों के निकट संपर्क में रह सकती थी, उनकी दशा व परेशानियों को जान सकती थी।

यदि संक्षिप्त रूप में कहें तो मीरा द्वारिका में केवल कृष्ण भक्ति में ही नहीं रुकी थी, बल्कि कुछ अन्य कारण भी थे। द्वारिका में भी मीरा के विषय में कई किंवदंतियां प्रचलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि महाराणा उदयसिंह ने मीरा को फिर से चित्तौड़ बुलाने के लिए कुछ पुरोहितों व सामंतों को द्वारिका भेजा। मीरा ने वापस जाने से इंकार कर दिया। मेवाड़ की लौटती हुई राजपूती सेना पर वहाँ की स्थानीय जनजाति ने हमला कर दिया, जोकि मीरा के प्रति उनके प्रेम का प्रमाण था। मेवाड़ के सामंतों तथा पुरोहितों ने मेवाड़ लौटकर यही बताया कि मीरा द्वारिकाधीश की मूर्ति में समा गई, किंतु इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है, यदि मीरा अपने अनुयायियों के सहयोग से किसी अज्ञातवास के लिए प्रस्थान कर गई हो।

भक्त मीरा–एक सशक्त मीरा

मीरा के जीवन से संबंधित जो भी जानकारी मिलती है, वह किंवदंतियों, भक्तों के विवरण तथा लोगों के प्रचलित विश्वास पर आधारित है। भक्तों ने मीरा में एक भक्त की छवि को ही देखा था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वे महाराणा परिवार के आंतरिक संघर्ष से बिल्कुल अंजान थे। भक्तों ने मीरा का विवरण अपने भक्तमालों में एक भक्त के रूप में ही दिया है। महाराणा मेवाड़ के परिवार में मीरा से पहले भी एक युवरानी का नाम भक्तों की गिनती में आता है, वह थी झाली रानी, जिनका उल्लेख नाभादास ने अपने 'भक्तमाल छप्पय' में किया है, जिसमें महिला भक्त कवयित्रियों का उल्लेख है।

मेवाड़ के महाराणा कुंभा एकलिंगनाथ के भक्त थे तथा मीरा के दादा रावदूदा चारभुजानाथ के परम भक्त थे। अत: युवरानी मीरा को भक्तों के बीच रहना और उन्हें भक्त माना जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, किंतु भक्त के अलावा भी मीरा का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व था। मीरा की छवि एक भक्त की ही नही थी, बल्कि तत्कालीन महाराणा परिवार में व्याप्त शक्ति संघर्ष में मीरा अवश्य ही शक्ति का केंद्र थी।

लोगों ने मीरा को एक भक्त के रूप में स्वीकार किया था, किंतु मीरा के लिए भक्ति साधन थी, साध्य नहीं। मीरा ने भक्ति के माध्यम से सती प्रथा जैसी कुरीतियों का प्रतिरोध किया तथा इसके मीरा ने भक्ति के माध्यम से ही जनस्वीकृति और लोकप्रियता को प्राप्त करके इस प्रतिरोध को अधिक सशक्त बनाया था। मीरा भक्तों के बीच में भक्त थी, किंतु चित्तौड़ दुर्ग में उनकी छवि मेड़तणी के रूप में थी अर्थात मेड़तिया राठौड़ों की बेटी। नवयुवक महाराणा मीरा को अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखता था, क्योंकि महाराणा विक्रमादित्य हाड़ाओं का भांजा था, जो राठौड़ों के प्रतिद्वंद्वी थे। मीरा ने उस समय की सामाजिक परंपराओं का खुलकर विरोध किया था। मीरा ने महाराणा महल को पार करके आम जनता के साथ सीधा संपर्क स्थापित किया था, जोकि महाराणा परिवार की परंपरा के विरुद्ध था।

मीरा कृष्ण भक्ति में मग्न होकर नृत्य करना शुरू कर देती थी। मीरा एक स्त्री होने के साथ-साथ महाराणा परिवार की पुत्रवधू थी, अत: आम जनता के लिए तो यह आश्चर्य का विषय तो था ही, साथ ही इनकी सास हाड़ी रानी उन्हें कुल का कलंक मानती थी। मीरा का घुंघरू बांधकर नाचना लोगों को आश्चर्यचकित करता था, अत: लोग मीरा को सनकी मानने लगे थे। मीरा परंपराओं का विरोध करने के कारण लोगों के निकट संपर्क में आ गई, इससे इनकी लोकप्रियता भी तेजी से बढ़ने लगी। भक्तों के लिए मीरा भक्त थी, लोक ने उन्हें बावरी बहू समझा, चित्तौड़ दुर्ग में मीरा मेड़तणी थी और स्त्री समाज ने उन्हें मुक्ति मार्ग का माध्यम माना। मीरा की मृत्यु के पश्चात् मेवाड़ के शासकों ने मीरा को भक्त रूप में स्वीकार कर लिया था, क्योंकि मीरा की लोकप्रियता से अब कोई खतरा नहीं था। सच तो यह था कि मीरा को भक्त से ज्यादा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना जा रहा था, जन-मानस में उनकी लोकप्रियता से इस बात की पुष्टि होती है कि मीरा की यह छवि मेवाड़ के शासकों को खतरा लगने लगी थी।

मीरा से संबंधित किंवदंतियां

मीरा के जीवन चरित्र को अधिक निकटता से समझने के लिए मीरा के विषय में प्रचलित किंवदंतियों का ज्ञान जरूरी है। मेवाड़, मारवाड़ एवं गुजरात क्षेत्र में मीरा से संबंधित, जो किंवदंतियां प्रचलित हैं, उनसे पता चलता है कि मीरा के प्रति लोक-आस्था बहुत गहरी थी। ऐसा माना जाता है कि महाराणा मीरा को मारना चाहता था और इसी उद्देश्य से उसने मीरा के लिए विजयवर्गीय बनिए के हाथों विष का प्याला भेजा, किंतु मीरा विष पीने के बाद भी जीवित रही। बनियों की एक शाखा को राजपूताने में विजयवर्गीय कहा जाता है और ये लोग आज भी मीरा की उपासना व मीरा मंदिर का निर्माण करवाते है। इसके पीछे यह मान्यता है कि इससे विष देने के कारण वे शाप के भागी बने, उससे मुक्ति मिलती है।

चित्तौड़ दुर्ग में मीरा के मंदिर के पास ही एक निर्गुणपंथी साधु की समाधि है। कहा जाता है कि यह समाधि मीरा के गुरु रैदास की है। मीरा जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखती थी। वह सबको एक समान देखती थी, किंतु रैदास और मीरा के समय एवं जीवनकाल के अंतर को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि रैदास मीरा के गुरु रहे होंगे। इस प्रकार मीरा व तुलसीदास के बीच पत्र-व्यवहार की चर्चा मिलती है, किंतु उनके समय एवं जीवनकाल में भी व्यापक अंतर मिलता है। ऐसे में पत्र-व्यवहार की बात पर विश्वास करना कठिन लगता है। हालांकि मीरा व तुलसीदास के परस्पर पत्र-व्यवहार के प्रमाण के रूप में तुलसी के एक पद– 'जाके प्रिय न राम वैदेही' का उल्लेख किया जाता है।

मेवाड़ की जनता के मन में मीरा के लिए प्रेम और श्रद्धा भरपूर थी, वे उनमें चमत्कारिक देवी को देखने लगे थे। अत: मीरा से संबंधित अनेक चमत्कारिक घटनाएँ प्रचलित हैं; जैसे–मीरा को मार्ग में शेर मिलना, शेर का मीरा को प्रणाम करके लौट जाना। महाराणा ने मीरा को तहखाने में बंदी बनाया और मीरा वहाँ भी सुरक्षित रहीं तथा मीरा का कृष्ण से प्रत्यक्ष बातचीत करना। ये चमत्कारिक घटनाएं थोड़ी असत्य प्रतीत होती हैं, किंतु शायद यही घटनाएं मीरा की व्यापक लोक-स्वीकृति का प्रमाण हैं। इससे यह भी पता चलता है कि तात्कालिक महाराणा को मेवाड़ की जनता पसंद नहीं करती थी। इससे यह भी पता चलता है कि मीरा एवं महाराणा के बीच संबंधों में कटुता थी। एक किंवदंती यह भी है कि मीरा को चित्तौड़ दुर्ग में किसी अवसर पर देवी की पूजा करने को कहा गया, किंतु उन्होंने पूजा करने से मना कर दिया और कहा कि उनके आराध्य केवल कृष्ण है एवं कृष्ण के अलावा वह किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करती। उस समय चित्तौड़ दुर्ग के बाहर कृष्ण भक्ति अधिक दिखाई पड़ती थी। मीरा के जीवन में ऐसे बहुत से कार्य हैं, जो जनता के लिए मीरा के प्रेम को प्रमाणित करते हैं, यदि ऐसे में मीरा देवी पूजा से इंकार करके कृष्ण पूजा पर जोर देती है, तो वह आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए। मीरा की भक्ति उनका व्यक्तिगत विषय था। वह किसी संप्रदाय या पंथ से जुड़ी हुई नहीं थी।

मीरा के विषय में ऐसी अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं कि मीरा ने बचपन में ही स्वप्न में कृष्ण से विवाह कर लिया था, इसलिए विधवा होकर भी वह वैधव्य को धारण नहीं करती थी। ऐसा भी कहा जाता है कि कुंवर भोज व मीरा के बीच शादी से पहले ही यह समझौता हो गया था कि वे किसी भी प्रकार का शारीरिक संबंध नहीं रखेंगे। एक किंवदंती यह भी है कि मीरा के

www.neerajbooks.com